संत सेवालाल जी की 283वीं जन्म जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का सम्बोधन

- मुझे इस बात की अत्यंत प्रसन्नता है कि मैं आज आप सबके बीच महान संत और समाज सुधारक संत श्री सेवालाल जी की 283वीं जन्म जयंती के अवसर पर आप सबके साथ इस कार्यक्रम में आपकी उल्लास और खुशी को साझा कर रहा हूं। बंजारा समाज के मेरे प्रिय साथियों को इस पवित्र दिन की बहुत बहुत शुभकामनाएं।

- इस कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए मैं संत सेवालाल जयंती समारोह समिति, अखिल भारतीय बंजारा सेवा संघ और कर्नाटक सरकार के कर्नाटक थंडा विकास निगम को हार्दिक बधाई देता हूं, उनका अभिनंदन करता हूं। लोक सभा में मेरे सहयोगी और माननीय सांसद डॉ. उमेश जी. जाधव जी का विशेष साधुवाद कि उन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजन के लिये विशेष प्रयास किए।

- साथियो, बंजारा समुदाय हमारे देश के सबसे जीवंत एवं बहुरंगी समुदायों में से एक है। समुदाय के लोग देश के अलग-अलग हिस्सों में रहते हैं।

- ऐतिहासिक रूप से आपके समुदाय की जीवन पद्धति एवं जीवन शैली प्रकृति के समीप एवं पर्यावरण के अनुकूल रही है।

- संत सेवालाल जी, जिनकी जन्म जयंती आज हम मना रहे हैं, उनका भी यही संदेश था कि हम अपने आस-पास के पर्यावरण को, वनों को संरक्षित करें, संवर्धित करें क्योंकि हमारा जीवन हमारी प्रकृति, हमारे पर्यावरण पर ही आधारित है।

- आज जब सम्पूर्ण विश्व महामारी, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है, तो संत सेवालाल जी की शिक्षाओं, उनके विचारों के अनुकरण से ही मानवता की रक्षा हो सकती है।

- संत सेवालाल जी का जीवन पूरे समाज, पूरी मानवता के लिए प्रेरणादायी है। वे जीवन भर अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते रहे, वंचित समाज के अधिकारों के लिए, उनकी सुरक्षा, उनकी गरिमा के लिए संघर्ष करते रहे।

- सेवाभाया जगदम्बा के शिष्य थे और जीवन भर ब्रह्मचारी रहे। उन्होंने कर्नाटक सहित देश के अन्य हिस्सों की यात्रा की और अपने बंधुओं की कठिनाइयों और दुःखों को दूर करने का काम किया।

- संत सेवालाल जी राष्ट्र निर्माण में सामाजिक सौहार्द और सद्भाव के महत्व को समझते थे। उनका संदेश था कि हमारा जीवन सदाचारी हो, समाज के अंदर, परिवार के अंदर महिलाओं को समुचित सम्मान मिले। वे सही अर्थों में सत्य, साहस, अनुशासन जैसे मानवतावादी आदर्शों के प्रतीक थे।

- वे समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों के विरुद्ध आजीवन संघर्ष करते रहे। उनकी द्वारा दी गई 22 शिक्षाएं वस्तुतः अपने समय से बहुत आगे की थीं और आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जो उनके समय में थी।

- यदि हम उनके बताए गए मार्ग पर चलें, उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएं, तो पूरी मानवता का एक बेहतर भविष्य बन सकता है।

- साथियों, आप जिस समाज के सदस्य हैं, उसका एक स्वर्णिम इतिहास रहा है। आपने उन्नति का हमेशा एक नया मार्ग अपनाया है, नवाचार आपकी सोच में रही है।

- बंजारा समाज ने ही मानव सभ्यता के आदिकाल में व्यापार-वाणिज्य की शुरुआत की। एक जगह से दूसरी जगह पर जाकर वस्तु विनिमय, लेन-देन और खरीद-बेच की प्रक्रिया चलाकर जनजीवन को व्यवस्थित किया।

- व्यापार ही नहीं बल्कि परंपरागत पशुपालन और कृषि कार्यों में आपकी भागीदारी देश की आर्थिकी को मजबूती देती है। समाज आज ऑर्गैनिक फ़ार्मिंग के लाभ से परिचित हो रहा है, पर आप यह कार्य सदियों से करते आ रहे हैं।

- सरकार की भी प्राथमिकता है कि देश में अन्य आम नागरिकों की तरह बंजारा समुदाय भी सम्मान जनक, गरिमापूर्ण जीवन निर्वहन करे, शिक्षा, आधुनिकता और विकास के हर क्षेत्र में बंजारा समाज की भागीदारी बढ़े, बंजारा समुदाय समाज की मुख्य धारा का अहम हिस्सा बने।

- हमारा प्रयास है कि आप अपनी परंपरागत जीवन शैली और सामाजिक परंपराओं, रीतियों को कायम बनाए रखते हुए भी समाज और देश की उन्नति एवं समृद्धि में बराबरी के साझेदार हों।

- इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक बार फिर इस वार्षिक कार्यक्रम के लिए आयोजकगणों का अभिनंदन करता हूँ, आप सभी भाइयों, बहनों, माताओं, गणमान्य जनों को शुभकामनाएं देता हूँ। संत श्री सेवालाल जी महाराज का वंदन करता हूँ।

- यह समारोह हमारे श्रद्धेय संतजनों की शिक्षा - संदेशों का जगत में और अधिक प्रसार करेगा, मेरी यही कामना है।

धन्यवाद। जय हिन्द।